National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(61): 130-132
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

कल्पना जैन
अतिथि सहायक आचार्य,
राजकीय कन्या महाविद्यालय माण्डल
भीलवाड़ा(राज.)

Correspondence:
कल्पना जैन
अतिथि सहायक आचार्य,
राजकीय कन्या महाविद्यालय माण्डल
भीलवाड़ा(राज.)

"श्रावकाचार ग्रंथों में सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चरित्र की त्रिवेणी: एक अध्ययन"

कल्पना जैन

भूमिका

जैन दर्शन में मोक्ष मार्ग की त्रिवेणी- सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र - को सर्वोपरि माना गया है। ये तीनों तत्व आत्मा के शुद्धिकरण के मूल आधार हैं। विशेषतः श्रावकाचार ग्रंथों में इन तीनों का व्यापक वर्णन मिलता है, जो गृहस्थ जैन अनुयायियों को व्यावहारिक जीवन में मोक्षमार्ग पर अग्रसर होने की शिक्षा देते हैं। यह शोधपत्र इन ग्रंथों में प्रस्तुत त्रिवेणी की व्याख्या का तुलनात्मक विश्लेषण करता है, जिससे स्पष्ट हो सके कि विभिन्न ग्रंथों में इन मूलभूत तत्वों को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

जैन दर्शन आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति पर केंद्रित है, जिसमें सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र की त्रिवेणी को मोक्षमार्ग का मूल आधार माना गया है। यह त्रिवेणी केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि एक व्यवहारिक मार्ग है, जो जीवन को संतुलित, संयमित और जागरूक बनाता है। विशेष रूप से श्रावकाचार ग्रंथ, जो गृहस्थ जैन अनुयायियों के लिए रचित हैं, इस त्रिवेणी की व्याख्या सरल और व्यावहारिक भाषा में करते हैं, जिससे साधारण गृहस्थ भी आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो सके।

इन ग्रंथों में सम्यक दर्शन को तत्वों में श्रद्धा, सम्यक ज्ञान को सत्य की यथार्थ समझ और सम्यक चारित्र को संयमित आचरण के रूप में देखा गया है। यह त्रिवेणी आत्मा के भीतर बसी चेतना को जागृत करने वाली शक्ति है। यह शोधपत्र श्रावकाचार ग्रंथों में इस त्रिवेणी की प्रस्तुति का तुलनात्मक मूल्यांकन करता है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि विभिन्न आचार्यों ने किस प्रकार इसकी व्याख्या की है और यह आज के सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कितनी प्रासंगिक है। यह अध्ययन न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि मानसिक और नैतिक उन्नयन की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी है।

1. सम्यक्दर्शन : तत्वार्थ का श्रद्धान करना

सम्यक दर्शन का अर्थ है - आत्मा, कर्म, पुण्य-पाप बन्ध-मोक्ष आदि तत्वों में सच्चा विश्वास रखना। यह मोक्षमार्ग की प्रथम सीढ़ी है। उपाध्याय जिनदास कृत 'श्रावकाचार में सम्यक दर्शन को "नव तत्वों में श्रद्धा" के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह स्पष्ट करते हैं कि जब तक श्रद्धा शुद्ध नहीं होगी, तब तक ज्ञान और चारित्र निष्कलुष नहीं हो सकते।

"सम्यग्दर्शनमज्ञाननिवृत्तिः संशयच्छिदः।
निश्चयात्मा स्थिरा बुद्धिः स्यादेष धारणा शुभ॥"

अर्थात "सम्यक् दर्शन (सही दृष्टिकोण) वह है जो अज्ञान को दूर करता है, संदेहों को काटता है, निश्चयस्वरूप होता है और जिसकी बुद्धि स्थिर होती है- यही शुभ धारणा है।" श्री सोमदेवसूरि-कृत 'नीतिनंदिनी' में सम्यक दर्शन को दृढ़ आस्था और विकल्पशून्य श्रद्धा बताया गया है। वह इस पर बल देते हैं कि बाह्य आडंबर और मिथ्यात्व से मुक्त होना सम्यक दृष्टि की पहचान है।

2. सम्यक्ज्ञान : तत्वों की सम्यक समझ

सम्यक ज्ञान का तात्पर्य है वस्तुओं को जैसा है वैसा जानना। यह ज्ञान विषय, साधन और प्रयोजन की दृष्टि से पवित्र होता है। आचार्य समंतभद्र कृत 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' में कहा गया है कि सम्यक दर्शन के बिना ज्ञान अपूर्ण है और ज्ञान के बिना चारित्र असंवेदनशील हो सकता है। इस ग्रंथ में ज्ञान की प्राप्ति के साधनों को विस्तार से समझाया गया है जैसे - अध्ययन, मनन, और तत्त्वविचार। 'तत्त्वार्थसूत्र' (जो भले ही मूल श्रावकाचार ग्रंथ न हो, परंतु श्रावक के लिए अत्यंत उपयोगी है) में सम्यक ज्ञान को पाँच ज्ञानों (मति श्रुत, अवधि, मनःपर्यय, केवल) के क्रम में व्याख्यायित किया गया है, जिनमें प्रथम दो श्रावकों के लिए अनिवार्य माने जाते हैं।

"ज्ञानं च चारित्र सहितं मोक्षमार्गस्य कारणम्।
तेन ज्ञानं विशुद्ध स्यात् सम्यक्त्वेनोपशोभितम्॥"

अर्थात "आचरण (चारित्र) के साथ जुड़ा हुआ ज्ञान ही मोक्षमार्ग का कारण बनता है। इसलिए ऐसा ज्ञान, जब सम्यक दृष्टि से युक्त होता है, तब वह विशुद्ध (शुद्ध) कहलाता है।"

3. सम्यक्चारित्र : आचरण की पवित्रता

सम्यक चारित्र का अर्थ हैं - आत्मा को राग-द्वेष से मुक्त रखना, संयमित जीवन जीना और पंचमहाव्रतों का पालन करना। रत्नकरण्ड श्रावकाचार में बारह व्रतों, अनुप्रेक्षाओं, ग्यारह प्रतिक्रमणों, और सात विवेकों का वर्णन करते हुए बताया गया है कि सम्यक चारित्र ही आत्मा के पंख हैं।

"व्रतानि नियमाश्चैव संयमा गुणसंयुताः।
एवमाचारमाख्यातं चारित्रं श्रेयोऽवहम्॥"

अर्थात "व्रत (संकल्प), नियम (नियमित अनुशासन) और संयम - जब ये सभी गुणों से युक्त होते हैं, तो यही आचरण (आचार) कहलाता है, और ऐसा आचरण ही श्रेष्ठ फल देने वाला 'चारित्र' है।"

श्रावकाचारों में चारित्र के प्रकार (देशव्रत, अनुव्रत, चौविहार आदि) गृहस्थ जीवन को संतुलित रूप से संयमित करने हेतु निर्देशित किए गए हैं।

चरित्रं भवति यतः सावद्ययोग परिहरणात।
सकल कषाय विमुक्तं विशदमुदासीनमात्मरूपं यत्॥

समस्त सावद्य योग के परिहार एवं संकल कषायो के त्याग को साम्यक्चारित्र कहा है।[1]

4. त्रिवेणी का पारस्परिक संबंध

श्रावकाचार ग्रंथों में त्रिवेणी - दर्शन, ज्ञान, चारित्र को अलग-अलग न मानकर एक दूसरे के पूरक के रूप में देखा गया है।

- बिना दर्शन के ज्ञान अंधा है।
- बिना ज्ञान के चारित्र दिशाहीन है।
- बिना चारित्र के दोनों का फल नहीं।

इस त्रिवेणी की तुलना एक दीपक से की जा सकती है- सम्यक दर्शन बाती है, सम्यक ज्ञान तेल है, और सम्यक चारित्र उसकी लौ है। तीनों के बिना प्रकाश (मोक्षमार्ग) संभव नहीं। 'सम्यक ज्ञान' का अर्थ होता है - सही, स्पष्ट और निर्मल ज्ञान, जो न केवल सतह पर दिखाई देने वाली बातों को समझे, बल्कि हर तत्व की गहराई और सत्य स्वरूप को भी पहचाने। जैन दर्शन के अनुसार सम्यक ज्ञान मोक्ष की दिशा में पहला और अनिवार्य कदम है।

'तत्वों की सम्यक समझ' से आशय है - आत्मा, कर्म, बंधन, मोक्ष आदि सिद्धांतों को केवल शब्दों में नहीं, बल्कि अनुभूति और विवेक से समझना । उदाहरण के लिए, यह जानना कि "मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं", केवल पढ़ लेना सम्यक ज्ञान नहीं है। बल्कि यह गहराई से समझना कि आत्मा शाश्वत है, शरीर नश्वर है - यही सम्यक तत्वज्ञान है।

यदि किसी को तत्वों की सही समझ नहीं होती, तो वह मोह, राग, द्वेष और माया में फँसा रहता है। सम्यक ज्ञान व्यक्ति को भ्रम से निकालता है, विवेकपूर्ण निर्णय देता है और उसे आत्मकल्याण की ओर ले जाता है। यह ज्ञान केवल पुस्तकों से नहीं, बल्कि विचार, आत्मनिरीक्षण और गुरु के
मार्गदर्शन से प्राप्त होता है।

इसलिए सम्यक ज्ञान वह दीपक है जो अज्ञान के अंधकार को मिटाकर तत्वों के प्रकाश से मनुष्य को सच्चे मार्ग की ओर ले जाता है।

"सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।[2]

अर्थात "सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र- ये तीनों मोक्ष का मार्ग हैं।" सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र - ये तीनों तत्व जैन दर्शन के "मोक्षमार्ग" के मूल आधार हैं, पर इनकी प्रासंगिकता केवल धार्मिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिक जीवन में भी अत्यंत आवश्यक है। सम्यक्दर्शन से अच्छी गति मिलती है। सम्यक्ज्ञान से संसार में यश फैलता है, सम्यक्चारित्र से सम्मान प्राप्त होता है और तीनों से मोक्ष की प्राप्ति होती है।[3]

5. वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता

आज का मानव बाह्य सुखों के पीछे दौड़ रहा है, जिससे उसका मन अशांत व अशुद्ध होता जा रहा है। जैन श्रावकाचार ग्रंथों में वर्णित यह त्रिवेणी आज के मानव को आत्म मूल्यांकन और संयम की राह दिखाती है। विशेषकर: सम्यक दर्शन - हमें अंधानुकरण से बचाकर विवेकशील बनाता है।

सम्यक ज्ञान - सूचनाओं की भीड़ में सत्य को पहचानने की क्षमता देता है।

सम्यक चारित्र - जीवन में अनुशासन और संतुलन लाता है।

इसलिए यह त्रिवेणी न केवल आध्यात्मिक साधना है, अपितु मानसिक स्वास्थ्य और नैतिक जीवन के लिए एक सार्वभौमिक मार्गदर्शिका भी है। सम्यक्दर्शन का अर्थ है सत्य को स्वीकारने की दृष्टि। आज की भागदौड़ और भ्रमित दुनिया में यदि व्यक्ति में सम्यक्दृष्टि नहीं है, तो वह गलत रास्तों पर चला जाता है। सच्चाई को पहचानना ही जीवन की पहली आवश्यकता है।

सम्यक्ज्ञान का अर्थ है - सही जानकारी, विवेकपूर्ण ज्ञान। आज जब सोशल मीडिया और झूठी सूचनाओं का प्रसार बढ़ गया है, तब सम्यक्ज्ञान ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को भ्रम से बचाकर सही निर्णय लेने योग्य बनाता है।

सम्यक्चारित्र का अर्थ है - विचार और आचरण की शुद्धता। नैतिकता, संयम और ईमानदारी जैसे गुण इसी में आते हैं। आज जब नैतिक पतन और स्वार्थ बढ़ रहा है, तब सम्यक्चारित्र ही समाज को संतुलित और शांतिपूर्ण बना सकता है।

शुभ प्रवृति रूपा या निवृत्तिर शुमाद्भावेत।
ताच्चारित्रं द्विधा प्रोक्तं सागार-विरतासितम्॥[4]॥

अर्थात् गुणभूषण श्रावकाचार में शुभ क्रियाओं में प्रवृत्ति और अशुभ कार्यो में निवृत्ति को सम्यक्चारित्र कहा है।

अतः ये तीनों न केवल आत्मकल्याण के लिए आवश्यक हैं, बल्कि एक विकसित, संतुलित और जागरूक समाज की नींव भी रखते हैं।

निष्कर्ष

श्रावकाचार ग्रंथों में सम्यक दर्शन, ज्ञान और चारित्र की त्रिवेणी एक जीवंत शिक्षाशास्त्र है, जो श्रावक वक को आत्मा के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराते हुए उसे मोक्ष की दिशा में मार्गदर्शन देती है। यह त्रिवेणी एक समग्र और समन्वित साधना है - जिसमें विश्वास, बोध और आचरण एकरूप होकर जीवन को उन्नत बनाते हैं। इस शोधपत्र में तुलनात्मक दृष्टि से यह स्पष्ट हुआ कि सभी श्रावकाचार ग्रंथों ने इस त्रिवेणी को अपने-अपने ढंग से, परंतु एकरूप भावना से प्रस्तुत किया है।

सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र - ये तीनों मिलकर एक ऐसे जीवन का निर्माण करते हैं। जो न केवल आत्मिक रूप से विकसित होता है, बल्कि सामाजिक रूप से भी शांतिपूर्ण और संतुलित रहता है। सम्यक्दर्शन व्यक्ति को सत्य, करुणा और विश्वास की ओर ले जाता है। सम्यक्ज्ञान उसे सही और गलत का विवेक देता है, जिससे वह भ्रम से दूर रहकर तर्कपूर्ण और जागरूक निर्णय लेता है। सम्यक्चारित्र अंततः इन दोनों को व्यवहार में लाकर संयम, नैतिकता और आचरण की शुद्धता स्थापित करता है।

आधुनिक युग में जहाँ भौतिकता, लालच और झूठ का बोलबाला है, वहीं यह त्रिवेणी हमें आंतरिक शांति, सच्चा उद्देश्य और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराती है। केवल ज्ञान या आस्था पर्याप्त नहीं, जब तक आचरण में शुद्धता न हो। इन तीनों का संतुलन ही मोक्ष (आत्मिक मुक्ति) का मार्ग बनाता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र - ये केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक आदर्श, व्यावहारिक और सत्यमार्गी जीवन की अनिवार्य शर्तें हैं, जो व्यक्ति और समाज दोनों को उज्ज्वल दिशा प्रदान करती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 पुरुषार्थसिद्धयुपाय पृ. 39 आचार्य अमृतचन्द्र
2 तत्त्वार्थसूत्र – उमास्वामि अध्याय 1, सूत्र 1
3 उपासकाध्ययन श्लोक 266 सोमदेव, कैलाश चन्द्र शास्त्री
4 गुणभूषण श्रावकाचार 3.1 श्रावकाचार संग्रहभाग 2

सहायक ग्रन्थ सूची

1 रत्नकरण्ड श्रावकाचार - आचार्य समंतभद्र
2 श्रावकाचार - उपाध्याय जिनदास
3 नीतिनंदिनी – सोमदेवसूरि
4 तत्त्वार्थसूत्र – उमास्वामि
5 सम्यक दर्शन, ज्ञान, चारित्र का तात्त्विक विवेचन - विद्या जैन
6 जैन दर्शन का संक्षिप्त इतिहास - नाथमल तातैया
7 Shravak Ethics in Jainism - Prof. Padmanabh Jaini
8 Jain View of Liberation - Dr. Nathmal Tatia
9 सागार धर्मामृत स्वोपज्ञ टीका - आशाधर प. कैलाश चन्द्र शास्त्री
10 जैन तत्व विद्या